DN: email=mail@realpatidar.com
Date: 2017.01.24 21:06:54 +05'30'

realpatidar.com
10-Oct-2014

શ્રી ઉમિયાયૈ નમઃ
જય લક્ષ્મીનારાયણ

હાલમાંજ એટલે કે ચાલુ વર્ષ ૨૦૧૪માં જ એક નવું પુસ્તક બહાર પાડવામાં આવેલ છે, જેનું નામ છે "નરેન્દ્ર મોદી એક શક્શીયત એક દૌર". આ પુસ્તકમાં સતપંથ અને પીરાણાની ઈમામ શાહ દરગાહ ઉપર થોડી માહિતી આપવામાં આવેલ છે. જેમાં જાણવા લાયક મુખ્ય મુદ્દાઓ નીચે જણાવેલ છે.

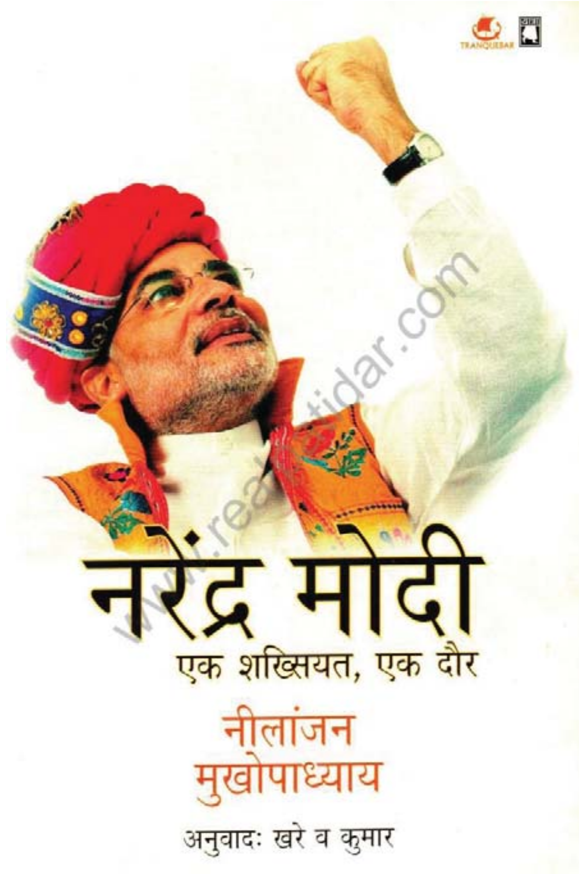

નરેન્દ્ર મોદી એક શક્શીયત એક દૌર

1. પીરાણા સ્થિત ઈમામ શાહ દરગાહનું ફોટું આપવામાં આવેલ છે. જેમાં હાજર બેગની કબર સાફ દેખાય છે.
2. ઈમામ શાહના અનુયાયીઓમાં ઘણા લોકો મૂળ કચ્છના વતની છે.
3. ૫૦૦ વર્ષ પહેલા ઈમામ શાહએ આ સંપ્રદાયને શરુ કર્યો.

realpatidar.com

realpatidar.com

4. તેના અનુયાયી, જેને સતપંથી કહેવામાં આવે છે, તેઓએ ઇસ્લામ અને હિંદુ પરંપરાને જોડીને પોતાનો અલગ સંપ્રદાય બનાવ્યો.
5. મુસ્લિમ અનુયાયીઓ, જેને સૈયદ કહેવામાં આવે છે, તેની સાથે પટેલ એકીકૃત થયા.
6. ૧૦ લોકોની એક પરિષદ હોય છે, જેમાં ૭ પટેલ હોય છે અને ૩ સૈયદ મુસલમાન હોય છે. આ બધાને કાકા કહેવામાં આવે છે.
7. હાલમાં માત્ર આ સંપ્રદાયને બાહ્ય રીતે હિંદુ "રંગ" આપવામાં આવેલ છે.
8. આ જગ્યાને મૂળ રીતે મકબરા અને દરગાહ કહેવામાં આવે છે.
9. પીરાણાનો મૂળ દ્વાર પર ઇસ્લામી વસ્તુ કલાનો પ્રભાવ સ્પષ્ટ દેખાય છે - તે મૂળ દ્વારને બંદ કરી દેવામાં આવેલ છે.
10. પીરાણા એ પોતાનું મૂળ અધ્યાત્મિક જોર ખોઈ દીધું છે.

આ પુસ્તકના મુખ્ય પાનાઓ આ સાથે જોડેલ છે.

Real Patidar

Download / Print: http://archive.org/details/series57

realpatidar.com

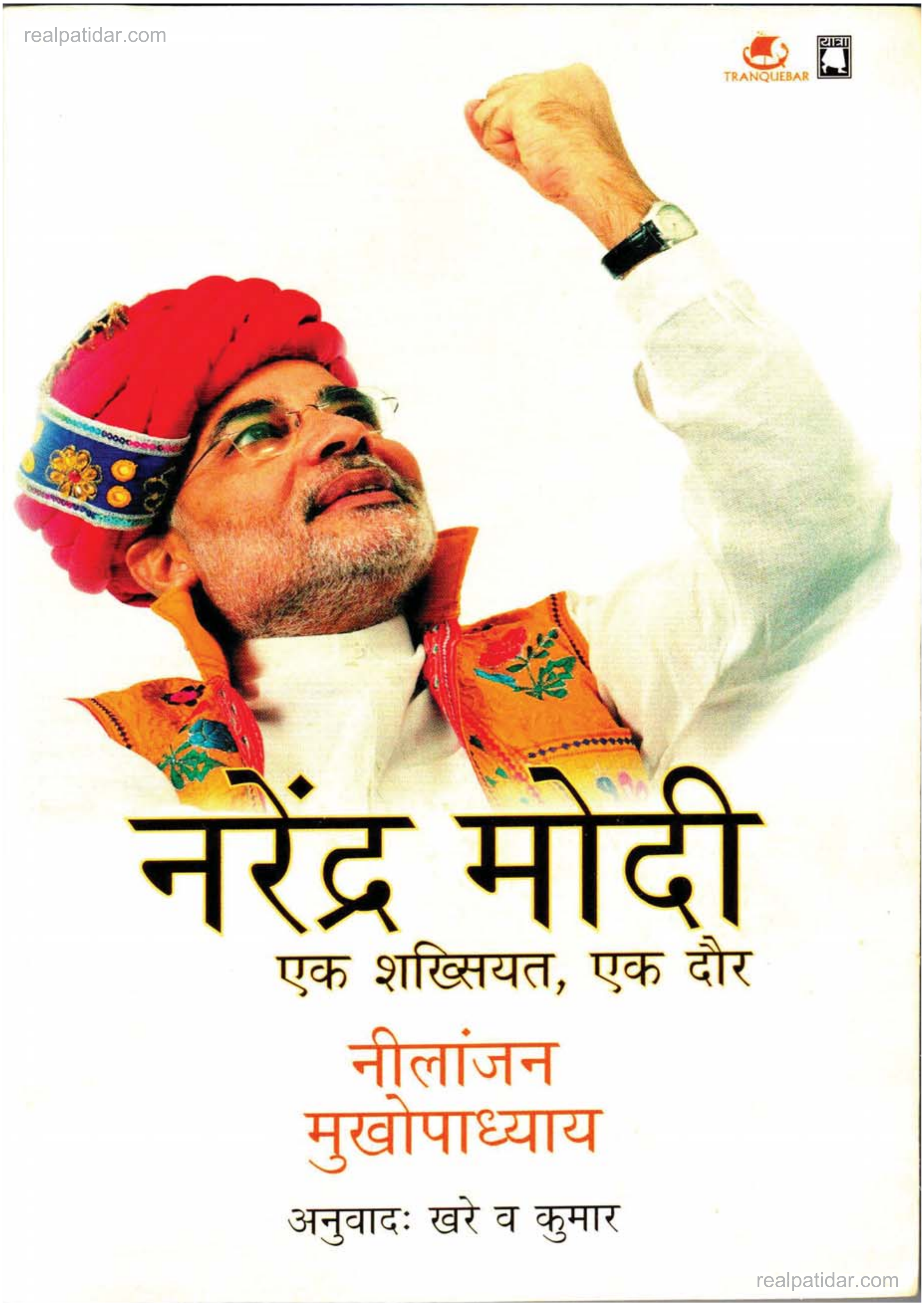
realpatidar.com
TRANQUEBAR
नरेंद्र मोदी
एक शख्सियत, एक दौर
नीलांजन
मुखोपाध्याय
अनुवादः खरे व कुमार
realpatidar.com

realpatidar.com

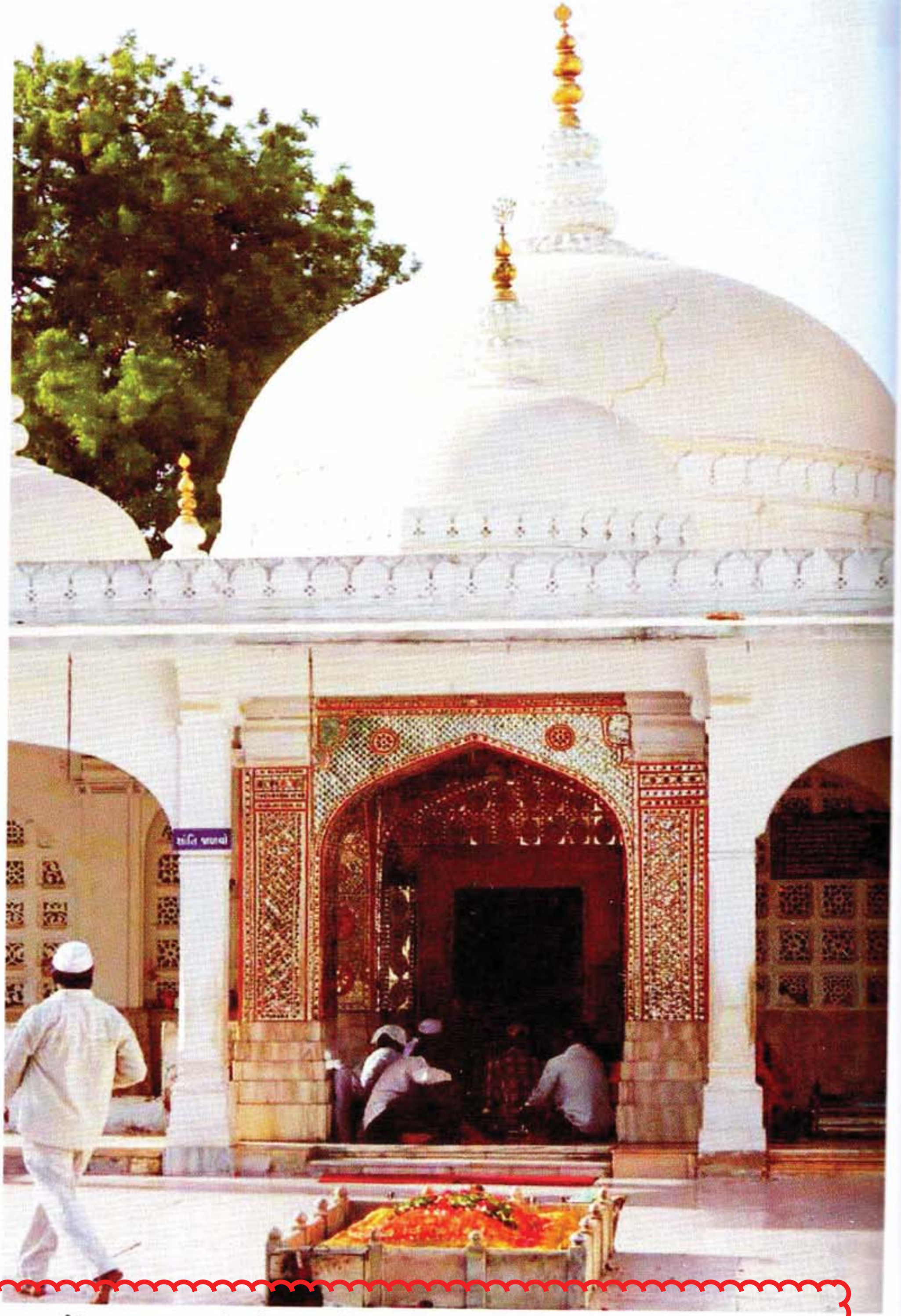

2012 में अहमदाबाद की सीमा पर पिराना दरगाह। *फोटो साभार: नीलांजन मुखोपाध्याय*

realpatidar.com

realpatidar.com

इफ्तार पार्टी नहीं करती क्योंकि वे इसे एक तरह की तुष्टीकरण के रूप में देखते हैं। हालांकि, अगस्त 2012 में ईद-उल-फितर के अवसर पर मुसलमानों के लिए मोदी का एक बधाई संदेश ट्वीट जरूर हुआ था। फिर भी सार्वजनिक स्थलों और समारोहों में अपनी व्यक्तिगत वरीयताओं के अनुसार हिस्सा लेने की मुसलमानों को अनुमति न देने की सामाजिक आम सहमति दर्शाती है कि उनकी पहचान के प्रदर्शन पर यह अपवाद नहीं बल्कि एक प्रकार से नियंत्रण है। ये सभी मोदी के आने के बाद के बदलाव नहीं हैं। लेकिन 2002 से दोनों पक्षों के मध्य अंतर और गहराया है जो यह जताता है कि मौजूदा खाई को चतुराई से बनाए रखा गया है।

दूसरी जगह है, गुजरात में अहमदाबाद के बाहरी इलाके में स्थित पिराना तीर्थ। इसके अनुयायियों की पुश्तैनी जड़ें कच्छ में हैं जो गोधरा कांड के बाद हुई हिंसा के बाद अंतर-सामुदायिक संबंधों में आए बदलाव की गवाही देता है। यह संप्रदाय कोई पांच सौ साल पहले इमाम शाह के द्वारा इस्लाम से इतर स्थापित किया गया, जिन्हें सूफी संत कहा गया। शुरू में उनके अनुयायी कच्छ के अंजर तालुका के पटेल समुदाय से बने और इन अनुयायियों को सत्यपंथियों का नाम दिया गया। जिन्होंने इस्लामिक प्रथाओं और हिंदू परंपराओं को आपस में जोड़कर अपना अलग संप्रदाय विकसित किया। और इस तरह इमाम शाह के मुस्लिम अनुयायी 'सईद' के साथ पटेल एकीकृत हो गए। ये अपनी धार्मिक व्यवस्था को लोकतांत्रिक तरीके से चलाते थे जिसमें सभी प्रमुख निर्णय एक प्रशासनिक परिषद लेती थी। दस लोगों की इस परिषद में सात पटेल और तीन सईद शामिल होते थे। इमाम शाह के इन उत्तराधिकारियों को काका कहा जाता था और इनका चयन पिछले पांच शताब्दियों से भी अधिक समय से पारस्परिक परामर्श के द्वारा किया जाता था।

जल्द ही कई अन्य समुदायों के जैसे सत्यपंथी भी हिंदुओं-मुसलमानों से अलग एक छोटे से तीसरे धार्मिक समूह के रूप में उभरे। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में सत्यपंथियों के बाहरी होने की स्थिति पर कई कारणों से दबाव पड़ने लगा: पटेल अनुयायियों की इस भावना के अनुरूप और तत्कालीन 'काका' का इस संप्रदाय के 'हिंदू रंग' पर अधिक से अधिक जोर देना और 'प्रत्येक सदस्य को राजनीतिक हिंदू के रूप में' स्थापित करना सबसे महत्वपूर्ण बात थी। और तो और जिस मकबरे को अब तक दरगाह कहा जाता था उसको भी बार-बार देवतुल्य 'श्री निष्कलंकी नारायण भगवान' का मंदिर कहा जाने लगा और इसके चारों ओर हिंदू रूपांकनों से सजावट होने लगी। गर्भगृह के अंदर जहां इमाम शाह का मकबरा स्थित है वहां होने वाले रस्म-रिवाज भी हिंदू तौर-तरीके से किए जाने लगे। जबकि 1997 में कच्छ में 'अंतर-सामुदायिक संबंध एक अध्ययन' के हिस्से के फलस्वरूप जब मेरा इस मकबरे पर जाना हुआ तो वहां मैंने नियमित भक्तों के बीच सईदों को भी पाया।

लेकिन 2012 में ऐसा नहीं था और वहां बहुत-कुछ बदल गया था। इस दरगाह

realpatidar.com

realpatidar.com

का मुख्य द्वार, जिस पर इस्लामी वास्तुकला का प्रभाव स्पष्ट था और जो एक विशिष्ट मध्ययुगीन संरचना थी उसे बंद किया जा चुका था। तीर्थ में प्रवेश के लिए अब एक विशाल अलंकृत द्वार था जैसा हिंदू मंदिरों में होता है। दरगाह के अंदर कब्र के अलावा बाकी सब चीजों पर हिंदू रंग चढ़ चुका था। सईद लोग क्यों नजर नहीं आ रहे और पुराना द्वार भी बंद है, मेरे इस सवाल पर झुंझलाकर काका बोले, सईद लोग तो यहां पिछले एक दशक में आना कम कर चुके हैं। लेकिन उनकी 'उपस्थिति' से समस्याएं बढ़ती हैं खासकर, मोदी को। जबकि सितंबर 2002 में मोदी ने सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए एक सद्भावना मिशन का आयोजन किया जैसा अतीत में कई भारतीय राजनीतिक नेता धर्मनिरपेक्षता के उचित प्रतीकों के स्वरूप के साथ आयोजन कर चुके थे। लेकिन मोदी ने मुसलमानों को किसी भी तरह का सार्वजनिक संकेत नहीं दिया। हालांकि मोदी ने शॉल स्वीकार किया था मगर मुसलमानों की टोपी को पहनने से इनकार करने के बाद सद्भावना मिशन सुर्खियों में आ गया। मीडिया ने एक सूफी नेता मौलवी--सैयद इमाम शाही सईद के नाम पर रपट दी। जबकि वह सत्पंथियों की शासी परिषद के एक निष्कासित सदस्य थे। इसके कारण अब सईद किसी मुसलमान की तरह अधिक और एक विद्रोही संप्रदाय के अनुयायी की तरह कम बोलते हैं। उन्होंने पत्रकारों से कहा, 'मोदी के टोपी को स्वीकार न करने से मेरा नहीं इस्लाम का अपमान हुआ।' भाजपा प्रवक्ता विजय रूपणी का तर्क वही था जो मोदी ने मुझसे एक साक्षात्कार में कहा था, 'नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट कहा है कि उनकी नीति अन्य दलों के विपरीत समाज के एक वर्ग के तुष्टिकरण की नहीं है, बल्कि हमारा प्रयास सभी के लिए विकास और हर किसी को बराबरी का दर्जा देने का है।'

कच्छ में समाज डेढ़ दशक से भी कम समय में ऐसा बंटा जिसे फिर पहले जैसा करना मुश्किल हो गया। इसी प्रकार पिराना दरगाह ने अपना नाम और अपना आध्यात्मिक बहुलवाद खो दिया और उसके अनुयायियों की एक बड़ी संख्या को उसी आस्था की ओर मुड़ना पड़ा जहां उसके संस्थापक इतर हुए थे। हालांकि, गुजरात में इन घटनाओं की शुरुआत मोदी युग से पहले हो चुकी थी लेकिन यह जिस तीव्र गति से और शायद अपरिवर्तनीय स्तर तक उनके कार्यकाल में पहुंची कि जब 'हममें' और 'उनमें' सबसे अधिक विलगाव दिखा। जब इस जीवनी पर काम करना शुरू किया तो इस बात को जानता था कि 1997 में गुजरात में मैंने जो विसंवाद पनपता देखा उसे व्यापक अत्याचारों ने और विस्तार दे दिया है। जिस कठोरता के साथ राज्य में विलगाव को हवा दी गई थी, मुझे यकीन है कि उससे जुड़े कई किस्से भी उपजे होंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए मैं अपने 'मोदीनामा' के लिए जिस कहानी की तलाश में था उससे न भटकूं, मैंने जानबूझकर केवल पिराना दरगाह और कच्छ तक अपनी यात्रा को सीमित करने का फैसला किया जबकि गुजरात में आध्यात्मिक विविधता के लिए और भी स्थान जाने जाते थे। दोनों जगहों के लिए मेरे पास निशानदेही करने के कुछ बिंदु

realpatidar.com